शौचालय ने लौटाया नि:शक्त राजाराम का सम्मान

55 वर्ष के राजाराम जो कि पन्ना जिले के अजयगढ विकास खण्ड की नयागांव पंचायत के गुलाबीपुर गांव के निवासी है। दो वर्ष पूर्व उनके पैरों में लकवा हो जाने और हड्डी के टी.बी. रोग से भी जूझ रहे है और चलने में असमर्थ हैं। राजाराम को शौच जाने के लिए भी उनके बेटे का सहारा लेना पड़ता था पर वो मज़बूर थे। कम से कम उनके कारण उनके बेटे को कम कष्ट हो यही सोचकर राजाराम भोजन भी कम किया करते थे ताकि उनको टट्टी करने दो–तीन दिन में एक बार ही जाना पढे।

राजाराम लकवा होने के पहले अपनी जिन्दगी में बहुत मेहनत करते और हर काम में सक्रिय रहते हुए स्वावलम्बी जीवन जी रहे थे। साथ में अपने परिवार का ध्यान और उनके उज्जवल जीवन के लिये दिन–रात खेतों में मजदूरी का काम कर के अपने परिवार का पालन–पोषण करते थे। परन्तु अब इस बीमारी ने उन्हें लाचार बना दिया है, हर छोटे छोटे काम के लिए दूसरों पर निर्भर हो गये है और बस घर के आँगन में एक खाट पर बैठे रहते हैं।

बीमार होने के छः माह पहले तक राजाराम का पुत्र उन्हें घर के नज़दीक के खेतों में शौच के लिए उठा कर ले जाया करता था। वो कुछ एक फीट गहरा गड्ढा खोदकर उन्हें षौच कराता फिर गड्ढे को मिट्टी से ढक देता था। पर ये कोई सुविधाजनक समाधान नहीं था। राजाराम बताते है कि "मुझे बहुत बुरा लगता था, बहुत घिन होती थी, पर मैं क्या करता? मैं लाचार था।" राजाराम ने भारी दिल से बताया और कहा कि "बरसात में यह काम और भी मुष्किल हो जाया करता था और दिन में मेरे पास कोई रहता भी नहीं था तो मैंने भोजन करना कम कर दिया ताकि मैं 2–2, 3–3 दिनों में ही शौच को जाऊँ।" दिन–प्रतिदिन में कमजोर होता जा रहा था और समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें?

अब एक उम्मीद उन्हें स्वच्छ–भारत मिषन से मिली जब जाग्रति युवा मंच संस्था जो कि एम.पी.वॉष के सहयोग से पन्ना जिले में कार्य कर रही हैं, के लोग उनके गाँव में

आए इन लोगों ने गांव के लोगों के मन में बेहतर जिन्दगी का विष्वास और उमंग जगाई। सही ढंग से लोगों को रहने के लिए प्रेरित किया और शौचालय बनाने की तकनीक समझाई और इसके लिए सरकारी मदद की योजना भी बताई।

चूकिं स्वच्छ–भारत मिषन के दिषा निर्देष में निःषक्तजनों पर विषेष ध्यान रखा गया है, स्वच्छ–भारत मिषन के अन्तर्गत ऐसे शौचालयों का निर्माण करने का प्रावधान है जो निःषक्तजनों के लिए अत्यन्त सुविधाजनक हों। ऐसे शारीरिक चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों के लिए जिन्हें शौच जैसी नितान्त जरुरी दैनिक क्रिया के लिए भी दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है। इसी प्रावधान को ध्यान में रखते हुये स्थानीय संस्था ने राजाराम के षौचालय निर्माण का संकल्प लिया और परिवार एवं पंचायत के सहयोग से राजाराम का षौचालय उनकी सुबिधा के अनसार बना दिया। षौचालय बनने से राजाराम की जिन्दगी कुछ बेहतर हुई है। शौचालय बनाने का एक निर्णय उनके लिए राहत लेकर आया। इसका परिणाम यह हुआ कि अब राजाराम को कम से कम शौच के लिए तो अपने बेटे पर निर्भर नहीं होना पड़ता है और वो खाना भी ठीक से खा रहे हैं। अब उनके शरीर में पहले से ज्यादा ताकत है। राजाराम सन्तुष्ट है कि उनका शौचालय उनके हिसाब से बना है। उन्होंने अपने शौचालय में वेस्ट्रन कमोड लगवाया और सहारे के लिए एक रस्सी भी लगाई। इस तरह के शौचालय का अनुभव उन्होंने अपने जबलपुर में इलाज के दौरान लिया था वो बहुत सुविधाजनक था। हालाँकि वेस्ट्रन कमोड बनवाने में ज्यादा खर्चा था सरकार की योजना के हिसाब से केवल रुपये 12,000 की राषि का ही भुगतान हो सकता था। तो उन्हें कर्जा भी लेना पड़ा रुपये 14,000 से रुपये 15,000 तक का। राजाराम खुष तो हैं पर उन्हें शौचालय तक जाने के लिये भी सहारा लेना पड़ता था। इस दुविधा का भी समाधान निकाला परहित संस्था ने और अब जल्द ही उन्हें एक व्हील–चेयर उपलब्ध करा रही है।

राजाराम बताते है कि उनके घर में शौचालय होने से उन्हें अत्यन्त सुविधा होती है। मानो उनकी जिन्दगी में एक नया मोड़ आ गया है शौचालय आने से सब खुष हैं साथ में परिवार के सभी सदस्य भी षौचालय का उपयोग करते हैं।

****

स्त्रोत : एम पी वॉश, वाटर एड